ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 5 | ISSUE - 12 | AUG - 2019

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

सौंदर्यशास्त्र में मानवीय जीवन-मूल्य

प्रा.डॉ. दिलीप कोंडीबा कसबे
हिंदी विभाग, विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला.

मनुष्य जीवन मूल्यवान है | अत: मनुष्य ने विशिष्ट मूल्यों के अनुरु प ही जीवन जिता है | 'मूल्य' शब्द 'मूल ' धातू में 'यत' प्रत्यय के आगमन से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ - किसी वस्तु के विनिमय में दिये जानेवाली राशी, दाम अथवा किमत है | परंतु आज 'मूल्य' शब्द का प्रयोग 'वैल्यू' गुण के अर्थ में लिया जा रहा है | साथ ही 'मूल' शब्द प्रेरणा, आदर्श, अनुशासन, प्रतिमान आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त हो रहा है | सी.ए. मूर ने भारतीय 'जीवन मूल्य' की चर्चा करते हुए कहाँ है - "पुरुषार्थ, अर्थ, काम, धर्म ही 'मूल्य' है|"[१] इससे यह स्पष्ट होता है कि, 'मूल्य' वे है जो मानव - जीवन व्यवहार में हित संवर्धक होते है | इसी के आधार पर जीवन - मूल्यों के अनेक रुप आदि सामने आते है -

१) वैयक्तिक जीवन मूल्य - इसमें किसी एक व्यक्ति की विशेष की आकांक्षा, संवेदनाओं अभिवृत्तियों से संबंधित 'मूल्य' को वैयक्तिक मूल्य कहते है | किंतु आज वैयक्तिक जीवन मूल्यों में भी किसी दूसरे व्यक्ति विशेष की ओर से संकोचितता निर्माण की जा रही है, ऐसा मेरा मानना है |

२) समष्टिगत जीवन मूल्य - समष्टिगत मूल्यों में मानव जीवन की अभिवृत्तियों से संबंधित विश्वजन, राष्ट्र, संस्कृति आदि आते है | जैसे मानव प्रेम, राष्ट्र प्रेम, समाज प्रेम, संस्कृति प्रेम, त्याग, दया, विरता, अर्थ, अहिंसा, सहायता, क्रांति, परिवर्तन, समन्वय, एकता की अभिवृत्ति से उत्पन्न मूल्य स्वीकृत है |

३) दार्शनिक जीवन मूल्य - मूल्य को दार्शनिकता में काफी महत्व है | वास्तवत: दार्शनिक मूल्यों से मध्ययुगीन संतो-भक्तों में सूर, कबीर, तुलसी के आधुनिक चिंत को में अरविंद , रविंद्रनाथ ठाकुर आदि प्रभावित हुए नजर आते है | साथ ही वेद, उपनिषद, प्राकृत- अपभ्रंश आदि दर्शन ग्रंथो, जैन, बौधो और नाथों के सिध्दांत मूल्यवर्धित है | पाश्चात्य दार्शनिकों में कांट, हेगले, अरस्तु तथा सुकरात आदियों ने भी दार्शनिक मूल्यों को जीवन तत्व का संबंध जोडा है | डॉ. दीवान चंद ने कहा है - "पृथ्वी पर कोई वस्तु इतनी महान नहीं , जितना मनुष्य है और मनुष्य में कोई अंश इतना महान नहीं जितना उसका मन |"[२] यहाँ यह स्पष्ट है कि, दार्शनिक मूल्य उत्पत्तिका केंद्र मन के साथ चिंतन और विचार भी है जो मानव जीवन को सही दिशा देते है |

४) आध्यात्मिक जीवन मूल्य - आध्यात्मिक मूल्यों में मन, आत्मा और परत्मा आता है | इसका कारण हम यह मान सकते है कि, कबीर, सुर, तुलसी, जायसी, निरा आदि के अराध्यदेव गुणों मूल्यों से संपन्न है, जैसे सत्य, शिव, सुंदर | क्योंकि सभीयों की इच्छा मोक्षप्राप्ती (ब्रम्ह) है |

५) नैतिक जीवन मूल्य - नैतिक का संबंध आचरण से है | और नैतिक मूल्य का संबंध व्यवहार, नीति, आचार-विचार, रुढि-परंपरा से है | यह नैतिक मूल्य शुभ-अशुभ, श्रेयस-प्रेयस, स्थापना, निर्माण, उपलब्धि, अन्वेषण एवं शुभ की ओर अग्रसर है |

६) सौंदर्य जीवन मूल्य - सौंदर्य चरम मूल्य है | क्योंकि सौंदर्य में वैयक्तिकता होने के कारण प्रकृति सौंदर्य, मानवीय सौंदर्य, सांस्कृतिक सौंदर्य आदि मर्मांकन इसमें आता है | जैसे - "उस मूल्य मर्यादा को गृहण करने का पथ उच्छृखल नही, वरन स्वतंत्रता और दायित्व से संबंधित स्वधर्म का पथ है |"[३] इस प्रकार आर्थिक मूल्य, भौतिक मूल्य,कल्याणकारी मूल्य,आनंदवादी मूल्य आदि मूल्यों को अनन्य साधारण महत्व है |

७) भौतिक जीवन मूल्य - भौतिक जीवन मूल्यों की अभिवृध्दी मानव के भितरी अभिवृत्तियों से है जो भौतिक अभ्युदय में सहायक होती है | साधन सामग्री के मूल्य इसके अंतर्गत आते है | जैसे - कला-कौशल, भौतिक सामग्री, संस्थाएँ जो सभ्यता का निर्माण करती है जिसके कारण वह स्वतंत्रता तथा सुरक्षा का कारण बनती है | इस दृष्टि से संपन्न सभ्यता भी साधनात्मक मूल्य है |

८) आनंदवादी जीवन मूल्य - वास्तवत: आनंदवादी जीवन- मूल्यों में आत्मानंद की स्थिति सर्वोच्च मानी जाती है | क्योंकि शारीरिक आनंद अर्थात स्वास्थ्य तथा ऐंद्रिय सुख है और दुसरी ओर मानसिक आनंद अर्थात इच्छापूर्तीजन्य आनंद है | इसलिए मेरा मानना है कि, स्वास्थ्य तथा ऐंद्रिय सुख और इच्छापूर्तीजन्य मानसिक आनंद भी चिरकालिन नही है क्योंकि एक इच्छा पूर्ती दूसरी इच्छा को जन्म देती है, तब अतप्ति आनंद में बाधक बनती है | ऐसे समय इस बाधा को दूर करने के लिए इच्छा के साथ 'सत्' की आवश्यकता है | व्यक्तिगत अहंकार को त्यागने पर इच्छा या भाव के उन्नयन से आनंद प्राप्त होता है | इसलिए सुखी एवं शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए आनंदवादी मूल्य का अपना महत्व है |

९) कल्याणकारी जीवन मूल्य - कल्याणकारी मूल्यों में हित की भावना है जो 'स्व' की मर्यादातम सीमा को पार कर 'सर्व' पर जाकर स्थित होती है | इसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि मूल्यों की गणना होती है | यहाँ कल्याणवादी मूल्यों का आधार 'श्रेय' माना है, जिसमें मानव प्रगति के लिए कल्याण और मंगलमय दृष्टि प्रदान करते है |

१०) कालजयी जीवन मूल्य - मानक अर्थात आदर्श मूल्य जीवन को व्यवस्थित बनाते है | आदर्श मूल्यों में अधिकतर अमूर्त मूल्यों का समावेश होता है | जैसे प्रेम, त्याग, सदाचार, अहिंसा, बलिदान, सत्य, आस्था, क्षमा, दया, शुध्द आचरण, सौहार्द्रता, सहनशिलता आदि कालजयी जीवन- मूल्य है | जैसे

अ) सत्य - सृष्टि में सत्य की प्रतीति सौंदर्य का विस्तार है | सत्य मानव के भीतर कलुष, मनोविकार, अवसाद, लोभ और अहिंसा जैसे को विचारों को नष्ट करता है तथा मनुष्य में लोक कल्याण, मंगली भावना को पैदा करता है | यही शाश्वत मूल्य है |

ब) अहिंसा - अहिंसा मन, वचन और कर्म का अनुशासन माना है | अहिंसा का आदर्श संयम और मन के विरोध में निहित है |

"आपन कौ मारें नहीं, पर कौं मारन जाय |
दादू आपा मारै बिना, कैसे मिलै खुदाय ||"[४]

क) प्रेम - प्रेम उदात्त एवं शाश्वत जीवन मूल्य है | जो प्रेम हितकर, स्थायी और श्रेयस है जिसकी दौड शरीर से आत्मा तक है और इसका अनुभव 'अध्यात्म' माना है | सूरदास के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति केवल प्रेम से ही हो सकती है ज्ञ

"प्रेम प्रेम सोहोई, प्रेम सो पार हि जैये |
प्रेम बंध्यो संसार, प्रेम परमारथ पैये ||
एकै निश्चय प्रेम को,जीव मुक्ति रसाल |
सोचो निश्चय प्रेम को, जिहि तै मिलै गुपाल |"[५]

ड) सेवा - प्रियजनों की मन, वचन, कर्म से सुश्रुषा कहना ही सेवा कहलाते है | जैसे गुरु सेवा, माता-पिता सेवा, संगत सेवा, पीडितों , आनाथों, अपाहिजों, गरीबों और बिमारियों की सेवा | गुरु ग्रंथ साहित्य में सेवा के संदर्भ में कहा है ज्ञ

"बिनु सेवा फल कबहु न पावसि |"[६]

इ) श्रध्दा - श्रध्दा याने विश्वास | सदैव श्रध्दा के साथ किया हुआ नमन, व्यक्ति की आयु, विद्या, यश, किर्ती और बल में वृध्दि करता है | महाभारत के शांतिपर्व में कहा है -

"अश्रध्दा परं पाप, श्रध्दा पाप प्रमोचनी |
जहाति पाप श्रध्दावान सर्वो जिर्णामिव त्वचाम |"[७]

इससे स्पष्ट है कि श्रध्दा पाप से मुक्ति दिलाती है इसलिए इसका जीवन मूल्यों में मौलिक स्थान है |

ई) सदाचार - सदाचार का अर्थ है उत्तम आचरण | "संक्षिप्त में-सज्जनों के सत्संग की इच्छा, दूसरों के सद्‌गुणों में प्रीति, गुरुजनों के प्रति नम्रता, विदया में अभिरुची, लोक निंदा से भय, ईश्वर में भक्ति आत्मदमन में शक्ति, दुष्टों के संगत से मुक्ति ये गुण जिस व्यक्ति में मिलते है वही सदाचारी कहलाता है |"[८] यहाँ चाणक्य सार संग्रह के अनुसार कहना है तो -'सदाचार सभी बुराईयों का नाश कर देता है ' यह मुझे सही लगता है |

उ) परोपकार - इसमें परोपकार सत्कर्म माना जाता है | इसलिए सत्पुरु षों, सतवृत्तिवाले ही परोपकार की भावना से गुण संपन्न होते है | जैसे महान कर्म विभूतियों - गुरु नानक, ईसा, बुध्द, मुहम्मद आदियों ने परोपकार के बारे में विश्वजन को संदेश के रुप में कहाँ है -

"नान,ईसा, बुध्द, महम्मद, सबका यह पैगाम |
पीर दु:खी की जो हरे, पीर उसी का नाम |"[९]

निष्कर्षत: हम कहेंगे की सृष्टि में ईश्वर निर्मित विभिन्न मानवीय जीवन मूल्यों के ऊहापोह का ध्येय एवं लक्ष्य पूर्ति का निर्देश इस जगत को दिया है ऐसा लगता है |

ऊ) भारतीय साहित्य में मानवीय जीवन - मूल्य - भारतीय साहित्य मानव मूल्यों से हमेशा जुडा हुआ है | इसलिए हजारों वर्षे पूर्व का साहित्य आज भी जीवन प्रकाशमय करता है | वेद कालिन साहित्य में 'ऋत'* और 'सत्य' की प्रतिष्ठा रही है | जो आज भी उसी रुप में विद्यमान और क्रियाशील लगता है | जैसे - "ऋत याने विश्व - प्रपंच का अंतवर्ती सिध्दांत जो स्थिर और चिरंतन है, इसका अनुभूत रु प है - सत्य | ऋत या सत्य को प्राथमिक जीवन- मूल्य माना गया है | ऋत और सत्य को उन्नति के नियम तथा सभी धर्मों का सार कहाँ गया है |"[१०] अर्थात 'ऋत' का सामान्य अर्थ माना है - जागतिक व्यवस्था, विश्व की शक्ति, 'ऋत' जीवन को पुष्ट करता है, जीवन की गति बढाता है, जीवन का विकास करता है | इसलिए वैदिक ऋषि की मूल कामना है कि -"अस्तो मा 'सद्मय' अर्थात हे प्रभु! मुझे असत्य से सत्य की ओर प्रेरित करो |"[११] यहाँ मेरी राय के अनुसार वैदिक ऋषि की मूल कामना मानव - कल्याण ही होगी | इसी के शिवाय भारतीय दर्शन शास्त्र चिंतन में भी मूल्यों के रुप में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की धारणा महाभारत, श्रीमद्भागवत (प्राकृत- अपभ्रंश) आदि में अधिक स्पष्ट हुई है | साथ ही बौधकालिन जीवन - मूल्यों में धर्म और मोक्ष भावना अधिक प्रबल रही है, जिसका अंतिम उद्देश्य निर्वाण अर्थात मोक्ष तक पहुँचना रहा है | किंतु कबीरदास आदि संतों ने शाश्वत मूल्यों को स्थापित करते हुए मानव निर्मित एवं स्वार्थपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक आदि मूल्यों की कडी निंदा की है, जो सही लगती है |

अंत में मैं कहूँगा कि जगत की समस्त वस्तुएँ एकदम अनुपयोगी नहीं है | क्योंकि व्यक्ति का पुरु षार्थ शक्तिशाली है | इसलिए वह जीवन में रु कता नहीं | उलटा वह जीवन मूल्य के आत्मिक साहित्य में चित्रित जीवन- मूल्य मनुष्य के आत्मिक विकास में सहायक होने के साथ - साथ मानवीय समाज को नैतिक मूल्य की दृढता भी प्रदान करते है , जो योग्य लगता है |

• सारांश -

मानव जीवन मूल्यवान होने के कारण अनेक रुप आदि दृष्टयव्य है | यहाँ वैयक्तिक मूल्य एक व्यक्ति विशेष से संदर्भित है | जैसे उस व्यक्ति की आकांक्षा, संवेदनाएँ आदि मूल्य | तो समष्टिगत मूल्यों में मानव जीवन की अभिवृत्तियों से संबंधित विश्वजन, राष्ट्र, संस्कृति, क्रांति आते है | इसलिए विद्वानों ने दार्शनिक मूल्यों को जीवन तत्वों से जोडा है | इसमें पाश्चात्य कांट, हेगले, अरस्तू, सुकरात है तो मध्ययुगीन भक्तों - संतों में सूर, कबीर, तुलसी और आधुनिक चिंतकों में अरविंद, रविंद्रनाथ ठाकुर तथा विविध धर्म और धर्मग्रंथ मूल्यवर्धित है | स्पष्ट है, अध्यात्मिक मूल्यों में अनेकों की मोक्ष प्राप्ति की ही इच्छा रही है | इसलिए तो मानवीय जीवन में आचरण अर्थात नैतिक मूल्यों में आचार- विचार, रुढी- परंपरा, व्यवहार, नीति आदि का आचरण होना अपेक्षित है | साथ ही जीवन के सौंदर्य मूल्यों में प्रकृति, मानवीय, सांस्कृतिक सौंदर्य आदि का उहापोह किया गया है |

इस मानवीय जगत में भौतिक साधन सामग्री को काफी महत्व है | इसके अधिन सभ्यता का निर्माण करनेवाली कला- कौशल, भौतिक साधन, संस्थाएँ आती है | यह स्वतंत्रता और सुरक्षा है | आनंदवादी जीवन में मन की अतृप्ति और अहंकार का त्याग कर कल्याणकारी मूल्यों को पनपित करना है | क्योंकि आदर्श मूल्यों में अधिकतर अमूर्त मूल्यों का समावेश है | इन मूल्यों में प्रेम, त्याग, समाचार, अहिंसा, बलिदान, सत्य, आस्था, क्षमता, दया, क्षमा, शुध्द आचरण, सहनशिलता आदि कालजयी जीवन - मूल्य सर्वोच्च और मूल्याधिष्ठित ठहरते है |

भारतीय साहित्य मानव- मूल्यों से हमेशा जुडा हुआ है | इसलिए हजारों वर्षे पूर्व का साहित्य आज भी जीवन प्रकाशमय करता है | जैसे अथर्ववेद, उपनिषद, परमचरिउ जैसा अध्यात्मिक साहित्य श्रेष्ठतम रहा है | इसमें सामाजिक जीवन - मूल्यों में विवाह प्रेम, दांपत्य प्रेम, रोमांटिक प्रेम, विभिन्न विषय प्रेम मूल्यवर्धित है | संक्षिप्त में इसमें अध्यात्मवाद की गूँज के साथ भौतिकवाद भी स्वीकृत है | अंत: में संक्षेप में हम कहेंगे कि सृष्टि में ईश्वर निर्मित विभिन्न मानवीय जीवन मूल्यों के ऊ हापोह का ध्येय एवं लक्ष्य पूर्ति का निर्देश इस जगत को दिया है , ऐसा लगता है |

• संदर्भ सूची :-

१) द इंडियन माइंड्स - सी.ए. मूर, पृष्ठ - १५३
२) दर्शन - संग्रह - डॉ. दिवान चंद, पृष्ठ - २५-२६

३) मानव मूल्य और साहित्य - डॉ. धर्मवीर भारती, पृष्ठ - १३०
४) हिंदी के कवि और काव्य - दादू दयाल, पृष्ठ - ८८
५) आधुनिक हिंदी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ - डॉ. देवेश ठाकुर, पृष्ठ - ९३
६) सरल गुरु सिख धर्म - जगजीत सिंह, पृष्ठ - १८३
७) महाभारत शांतिपर्व
८) महाभारत अनुपर्व
९) संत संस्कृति और धर्मनिरपेक्षता - डॉ. नत्थुलाल गुप्ता और संध्या गुप्ता, पृष्ठ - २२३
१०) अथर्ववेद
११) ब्रहदारण्यकोपनिषद